मैथिली व्याकरण
ओ रचना

मैथिली व्याकरण ओ रचना

(माध्यमिक, अन्तर-स्नातक, स्नातक, एम.ए., यू.जी.सी.–नेट/जे.आर.एफ.,
बी.पी.एस.सी., यू.पी.एस.सी. तथा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाक अभ्यर्थीक लेल उपयोगी)

डॉ. विजयेन्द्र झा



प्रतिभा प्रकाशन
मुजफ्फरपुर / दिल्ली

ISBN : 978-81-948464-4-4

प्रथम संस्करण
2021

प्रकाशक
प्रतिभा प्रकाशन
केदारनाथ रोड (बिजली ऑफिसक निकट)
मुजफ्फरपुर-842001
मो.-9955658474, 9572980709

दिल्ली कार्यालय
A/ 162, सुदर्शन पार्क, मोतीनगर
नई दिल्ली-110015
मो॰-8863874688, 7488415630

अक्षर-संयोजन
अमित कुमार कर्ण

मुद्रक
जी॰ एस॰ ऑफसेट, दिल्ली - 32

मूल्य
495/- (चारि सए पनचानवे टाका)

Maithili Vyakaran O Rachna

Written by : Dr. Bijayendra Jha **Rs. 495.00**

समर्पण

पं० दुर्गानन्द झा



(23 नवम्बर, 1938 ई०–01 नवम्बर, 2016 ई०)
स्मृतिशेष परमपूज्य बाबूजीकेँ
सादर सहृदय समर्पित

–विजयेन्द्र

विषय-सूची (Index)

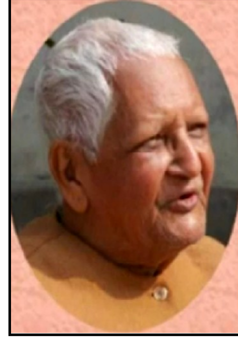
व्याकरण

रचना

काव्य–विवेचन

भाव–विस्तार एवं अर्थ–प्रकाश

शुभाशंसा



डॉ. विजयेन्द्र झाक लिखल 646 पृष्ठक विशालकाय पुस्तक 'मैथिली व्याकरण ओ रचना' देखल आ यत्र-तत्र पढ़ल। विशालता, विशुद्धता आ उपयोगिता तीनू दृष्टिएँ बड़ प्रशंसनीय अछि। हम जे काज सूत्र रूपमे कएल तकर ई महाभाष्य बूझू।

गोविन्द झा
3.2.21

(पं० गोविन्द झा)

प्रो. शशिनाथ झा
कुलपति
कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत
विश्वविद्यालय, दरभंगा



Prof. Shashi Nath Jha
Vice-Chancellor
K.S.D. Sanskrit University
Darbhanga
Mob.-9199475909

शुभाशंसा



डॉ. विजयेन्द्र झाक 'मैथिली व्याकरण ओ रचना' मैथिली व्याकरणशास्त्रक विराट स्वरूपकेँ देखबैत 56 परिच्छेदक साढ़े छओ सए पृष्ठमे भेदोपभेद सहित सोदाहरण वर्ण-पद-वाक्य-प्रकृति-प्रत्यय-सन्धि-समास-कारक-शब्दार्थवैशिष्ट्य-वाग्धारा-लोकोक्ति-विराम-काव्य-छन्द आदिक सुव्यवस्थित निरूपण करैत अछि।

लेखक बहुत परिश्रम कएने छथि। बहुत समय लगाओलनि अछि। एकर प्रामाणिकता पूर्णत: बनल रहए ताहि लेल लेखक एकरा कोनो अधि कारी विद्वान् सँ दृष्टिपूत कराए लेथु।

एहि महत्त्वपूर्ण व्याकरण ग्रन्थक समादर मैथिली जगत्मे अवश्य होएत। एहि पुस्तकक संग लेखकहुक लेल हमर शुभाशंसा प्रस्तुत अछि।

शशिनाथ झा
30.01.2021
(शशिनाथ झा)

प्रो. हनुमान प्र. पाण्डेय
कुलपति
Prof. Hanuman P. Pandey
Vice-Chancellor



Baba Saheb Bhimrao
Ambedkar Bihar University
Muzaffarpur-842001 (Bihar)
(NAAC Accredited 'B)

Ref....................... ***Date : 09.02.2021***



शुभकामना संदेश

मुझे इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता है कि ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय के मैथिली विभाग के प्राध्यापक डॉ. विजयेन्द्र झा ने विगत कोरोना लॉकडाउन की अवधि में 646 पृष्ठों की पुस्तक 'मैथिली व्याकरण ओ रचना' लिखा है, जो प्रकाशित होने जा रही है। मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि मैथिली में दर्जनों व्याकरण की पुस्तकें पूर्व में प्रकाशित हो चुकी है, मगर 56 परिच्छेदों में विभक्त यह विशालकाय पुस्तक मैथिली व्याकरणशास्त्र के विविध आयामों की समग्रता के लिए विशेष महत्त्व रखती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विद्यालय एवं विश्वविद्यालय से लेकर विविध प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्र-छात्राओं के लिए यह पुस्तक ज्ञानवर्द्धक तथा उपयोगी साबित होगी।

मैं इस पुस्तक के लेखन और प्रकाशन की तत्परता के लिए विजयेन्द्रजी की अकादमिक उपलब्धियों की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी ऐसे ही रचनात्मक कार्य करके विश्वविद्यालय का नाम रौशन करते रहेंगे।

(हनुमान प्रसाद पाण्डेय)

दू शब्द



डॉ. विजयेन्द्र झाक 'मैथिली व्याकरण ओ रचना' देखबाक अवसर प्राप्त भेल मुदा एहिसँ सम्बद्ध विषयपर तँ ओही व्यक्तिकेँ अपन नीक-अधलाह विचार देबाक अधिकार भ' सकैत छैक जकरा व्याकरणक ज्ञान होइक। हमरा तँ व्याकरणक 'अ-आ....' पर्यन्त नहि बूझल अछि मुदा स्थालीपुलक न्यायेन एतबा धरि तँ स्पष्टे बुझाइत अछि जे एहिसँ छात्र-शिक्षक एवं जिज्ञासुलोकनिकेँ एकेठाम सभ सामग्री अवश्ये अछोँ क' देतनि।

ओना एहिसँ पूर्व जतेक पोथी व्याकरण विषयक लिखल गेल छैक तकर सविस्तर चर्चा एहि पुस्तकक विषय-प्रवेशमे देलो गेल छैक जकर नामक उल्लेख करब मात्र पृष्ठपेषण होयत, मुदा मैथिलीक छात्रलोकनिकेँ ई ग्रन्थ सर्वाधिक उपयोगी हेतैक से हमरा पूर्ण विश्वास अछि, कारण एहिमे एकेठाम सभ सामग्रीकेँ समेटि कय राखि देल गेल छैक।

डॉ. विजयेन्द्र झाक अथक परिश्रम अवश्ये साधनाक सरोवरमे सिद्धिक सरोज प्रस्फुटित करतैक एहिमे कोन संदेह? एतय छप्पन

परिच्छेदमे छप्पनो प्रकारक भोग लागल अछि, कारण 'मैथिली व्याकरण ओ रचना'क सभ विषयपर विवेचन भेल अछि। काव्य-विवेचन, छन्द-विवेचनक संगहि भाव-विस्तार, अर्थ-प्रकाश, संक्षेपण, अनुच्छेद-लेखन, अनुवाद, सरलार्थ, आशय, सारांश, व्याख्या, निबंधक रूप ओ तत्त्व, पत्र लेखनक प्रकार इत्यादि सभ सामग्री राखि देल गेल अछि जे सभ अवस्थाक लोकक हेतु सुपाच्य अछि। एतेक रास विषय-वस्तुक विवेचन करब यथार्थतः कठोर साधनाक परिचायक अवश्य अछि, तखन त्रुटि कतय नहि रहैत छैक, सृष्टिये त्रुटिसँ भरल अछि–'त्रिभुवन वसताँ कस्य दोषो न जात:'। प्रमादवश कतहु किछु भ' सकैछ। हम अपन हार्दिक शुभकामना दैत एहि अमूल्य कृतिक यथाशीघ्र प्रकाशनक कामना करैत छी।

वसंत पंचमी
16.02.2021

देवेन्द्र झा

प्रो०(डॉ.) देवेन्द्र झा
एम.ए., पीएच.डी., डी.लिट्
अवकाश प्राप्त अध्यक्ष, मैथिली विभाग
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर

शुभास्ते पंथानः



भाषा, व्याकरण आ शब्दावली दुनूसँ बनैत अछि। व्याकरण ढाँचा बनबैत अछि तँ आकृति-प्रकृति शब्द बनबैत छैक। शब्दक पाछू संस्कार-परम्परा छैक, यैह परम्परा अभिव्यक्तिक व्यक्तित्वकेँ विशिष्टता प्रदान करैत अछि।

डॉ. विजयेन्द्र जी मैथिली भाषा संसारमे व्याकरणरूपी नव वटवृक्ष रोपलनि अछि। ओकर प्रत्येक शाखा-प्रशाखामे विषयगत विचारक अंगुरक गुच्छा जकाँ व्याकरणक सामग्री केँ सजौलनि अछि।

व्याकरणक गाछक किछु डारिकेँ काव्यशास्त्री बनएबाक प्रक्रियारूपी विषयक फलसँ जे रस टपकल ओकर पान जे करत ओ साहित्य-जगत्‌मे अपन ख्याति पसारत।

प्रो. विजयेन्द्र झा व्याकरणक पहिल लेखक छथि जे एतेक सामग्रीकेँ एकठाम पाठकक थारीमे परोसि कय जे भव्यता प्रदान कयलनि अछि ओ सराहनीय आ प्रशंसनीय अछि।

हम आशीर्वाद दैत छियनि जे ओ अपन उर्जासँ साहित्यरूपी गाछमे नव-नव पोथीरूपी फलसँ सुसज्जित करैत जीवनरूपी नावकेँ आनन्दक सागरमे खेबैत रहथि। इति शुभम्।

इन्द्रकान्त झा

नरकनिवारण चतुर्दशी
10.02.2021

–प्रो. (डॉ.) इन्द्रकान्त झा
अवकाश प्राप्त अध्यक्ष, मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'
आचार्य (त्रय) एम.ए. (द्वय), पीएच.डी.
(से.नि.) प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
संस्कृत विभााग
हर्षपति सिंह कॉलेज, मधेपुर (मधुबनी)



आवास-5ए, मुखिया पोखर,
लक्ष्मीसागर, दरभंगा
मो.-09931463627

शुभकामना



मैथिलीभाषी-क्षेत्र ओ मैथिली भाषा निरंतर शासक ओ शासन व्यवस्थासँ प्रताड़ित होइत रहल अछि। मुगल शासनमे अरबी-फारसी शब्द एहि क्षेत्रकेँ गछारि लेलक तँ ब्रितानी-सरकारक शिक्षा-व्यवस्थामे निर्धारित पाठ्यक्रमसँ हिन्दी-अंग्रेजी शब्द छूटि क' खेलाय लागल। देश स्वतंत्र भेलो पर राज्य-सरकारक ओएह शिक्षा-पद्धति बनल रहल। त्रिभाषा-फार्मूला लागू भेलो पर एहि क्षेत्रमे मातृभाषाक माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षाक व्यवस्था नहि कयल गेल। परिणाम ई भेल जे आन-आन भाषाक शब्दकेँ बोलचालक भाषामे प्रयोग करबाक लेल मैथिलीभाषी विवश होइत रहल अछि।

यद्यपि समस्त भारत ओ मैथिलीभाषी क्षेत्रमे आदिकालहिसँ संस्कृतशास्त्रक शिक्षा-व्यवस्था प्रचलित रहल। संस्कृत व्याकरण, साहित्य, दर्शन आदि शास्त्र ततेक परिमार्जित ओ स्वयंसिद्ध अछि–ज्ञान-विज्ञानक विचार-वैविध्यमे परिपूर्ण अछि जे कोनो आधुनिक भारतीय भाषाक लेल ओ उपजीव्य शास्त्र बनले रहल।

वास्तविकता इहो अछि जे बहुतो आधुनिक भाषाकेँ आत्मनिर्भर करबाक उद्देश्यसँ ब्रितानी-सरकारक किछु विद्वान् अधिकारी ओहि-ओहि क्षेत्रक प्रसिद्ध वैयाकरणक सहयोगसँ भाषा-व्याकरणक रूप-रेखा तैयार कयलनि। ओ मैथिलीकेँ सेहो प्राप्त भेलैक। मुदा, ओकर आगाँ भाषा-आधारित विकास नहि भ' सकल। महावैयाकरण पं० दीनबन्धु झा मिथिलाभाषा-विद्योतन नामक उत्कृष्ट व्याकरण ल' क' अयबो केलाह तँ हुनक समाजेक मैथिलीसेवी विद्वान् मान्यता नहि देलथिन।

ओकर बाद मैथिलीनामा व्याकरण सब आबय लागल ओ सरकारी शिक्षण-संस्थाक निर्धारित पाठ्यक्रमेक अनुकूल-आन भाषाक छपल व्याकरण जकाँ-छात्रक लेल उपकारक बनल रहल अछि।

एही क्रममे प्रस्तुत 'मैथिली व्याकरण ओ रचना' वृहत्कायमे आयल अछि। एहि पोथीक विषय-वस्तुक संचयनमे लेखक प्रो. विजयेन्द्र झाजी अपन बौद्धिक उदारताक विशिष्ट परिचय देलनि अछि। साढ़े छः सय पृष्ठक ई पुस्तक 56 परिच्छेद (अनुभाग वा पाठ)मे बाँटल अछि, जाहिमे व्याकरणक आवश्यक विषय-वस्तुक उपस्थापनक संगहि काव्य ओ छन्दक सोदाहरण विवेचन तथा रचनाक प्रकार ओ अनुवाद आदि उदाहरण सहित प्रस्तुत कयल गेल अछि।

डॉ. झा केहन आँखिगर छथि, कोनो विषयकेँ कोना आँखियासि क' देखैत छथि आ बिटिया क' ओकरा धरैत छथि आ कोना फरिछा क' ओकरा उपस्थित करैत छथि तकर साक्ष्य प्रत्येक परिच्छेदमे देखल जाय सकैत अछि।

इहो बात सर्वविदित अछि जे कोनो प्रकारक कृति कतबो सावधान भ' क' तैयार कयल जाय ओ सर्वथा निर्दोष नहि होइत अछि। तथापि कृतिकार लेखनमे अग्रसर रहितहि छथि। डॉ. विजयेन्द्र बाबू अपन प्रतिभाक चमत्कारसँ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ निरंतर एहिना भरैत रहथि-चमत्कृत करैत रहथि-एही शुभकामनाक संग शुभ आशिष।

11.02.2021

(फूलचन्द मिश्र 'रमण')

भूमिका

मा मैथिलीक वाटिकामे अपन प्रथम पुष्प-गुच्छक रूपमे 'मैथिली व्याकरण ओ रचना' समर्पित करैत अत्यन्त हर्षित, आह्लादित छी। एहि पोथीक रचनाक अपन एकटा इतिहास अछि। एकर सम्पूर्ण रचना कोरोना कालमे भेल अछि। ओना छात्र जीवनहिसँ हमरा मैथिली व्याकरणशास्त्र सम्बन्धी पोथीक खगता बुझाइत रहल अछि। सन् 1994मे स्मृतिशेष परम पूज्य गुरुवर डा. दिनेश कुमार झाक परामर्शपर हम व्याकरणशास्त्रक पोथी लिखबाक श्रीगणेश कएने छलहुँ, मुदा से कोनो कारणसँ संभव नहि भ' सकल।

व्याकरणशास्त्रसँ सम्बद्ध जतबा पोथीक प्रयास अद्यावधि मैथिलीमे भेल अछि, ओहिमे जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सनक 'मैथिली ग्रामर'; महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाक 'मिथिलाभाषा विद्योतन'; पं. गोविन्द झाक चारि गोट पोथी 'लघुविद्योतन', 'उच्चतर मैथिली व्याकरण', 'मैथिली व्याकरण रचना विजय' तथा 'मैथिली परिशीलन'; डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित'क 'आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना'; बाबू भोला लाल दासक 'मैथिली व्याकरण प्रबोध', 'मैथिली व्याकरण चन्द्रोदय' तथा 'सरल व्याकरण'; प्रो. रमानाथ झाक 'मैथिली व्याकरण प्रवेशिका'; प्रो.आनन्द मिश्रक 'मिथिलाभाषाक सुबोध व्याकरण'; डॉ. युगेश्वर झाक 'मैथिली व्याकरण आओर रचना'; प्रो.धीरेन्द्रनाथ मिश्रक 'मैथिली भाषाविज्ञान, व्याकरण ओ रचना'; पं. (डॉ.) शशिनाथ झाक 'निबन्धमन्दारमञ्जरी'क किछु अंश; पं. गोविन्द झा द्वारा अनूदित आ डा. रमानन्द झा 'रमण' द्वारा सम्पादित 'जार्ज ए. ग्रिअर्सनकृत मैथिली व्याकरण' तथा पं. मतिनाथ मिश्र 'मतंग'क 'मैथिली व्याकरण रचना प्रकाश' आदि प्रमुख अछि। मुदा उल्लिखित पोथीसभमे सँ प्राय: अधिकांश पोथी पुस्तक केन्द्र सभमे अनुपलब्ध अछि। तेँ व्याकरणशास्त्रक एकटा एहन पोथीक खगता

रहलैक अछि जे छात्रलोकनिक जिज्ञासाक पूर्ति क' सकए।

प्रस्तुत 'मैथिली व्याकरण ओ रचना' नामक पोथी माध्यमिक, अन्तर-स्नातक, स्नातक, एम.ए., यू.जी.सी. (नेट/जे.आर.एफ.), बी.पी. एस.सी., यू.पी.एस.सी. तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षार्थीलोकनिकेँ ध्यानमे राखि लिखल गेल अछि। छप्पन परिच्छेदक एहि पोथीकेँ चारि भाग- व्याकरण, रचना, काव्य-विवेचन तथा भाव-विस्तार एवं अर्थ प्रकाशमे विभक्त कएल गेल अछि; जाहि अन्तर्गत वर्ण, पद, वाक्य, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, प्रकृति, प्रत्यय, संधि, समास, कारक, शब्दार्थ वैशिष्ट्य, वाग्धारा, लोकोक्ति, विराम, काव्य, रस, छन्द, अलंकार, अर्थ-प्रकाश, पत्र-लेखन, व्याख्या, निबंध इत्यादिक भेदोपभेद सहित सोदाहरणक समावेश कएल गेल अछि।

ओना व्याकरणशास्त्र सदृश गम्भीर विषयपर लेखनी उठएबाक हेतु अपेक्षित अपन योग्यता, अध्यवसाय एवं मनोयोगक सम्बन्धमे तँ किछु नहि कहि सकैत छी, मुदा एतबा कहब जे प्रस्तुत ग्रन्थमे आवश्यक विषयक ग्रहण आ अनावश्यक विषयक त्याग-नीतिक अवलम्बनक यथासाध्य प्रयास धरि अवश्य कएल अछि। व्याकरणशास्त्रक गूढ़ातिगूढ़ सिद्धान्तक विचारजालमे अपन मौलिकताकेँ मिझराए पाठकलोकनिकेँ भ्रमित करबाक अपेक्षा विविध सिद्धान्त स्वरूपक निर्भ्रान्त प्रतिपादन एवं व्याकरणशास्त्रक एकटा सम्पूर्ण धारणाक विकासमे सहायक स्वच्छ, सरल, ग्राह्य शैलीक उपयोग करब हमर अभीष्ट रहल अछि; तथापि प्रस्तुत प्रयासक सर्वथा दोषमुक्त होएबाक कल्पना नहि कएल जा सकैछ। एहि विषयमे एतबे कहल जा सकैछ जे कोनो वस्तुक महार्हताक निर्णय ओकर दोषाभावक आधारपर नहि, दोष-गुणक तुलनात्मक न्यूनाधिक्यक आधारपर होएबाक चाही।

सर्वप्रथम, हम अपन परम पूज्य बाबूजी स्मृतिशेष पं. दुर्गानन्द झाकेँ नमन करैत, पूजनीया, प्रातःस्मरणीया ममतामयी माय श्रीमती अन्नपूर्णा देवीकेँ प्रस्तुत पोथी समर्पित करैत छिअनि; जनिक स्नेहिल शीतल छाहरि आ आशीर्वाद कंटकाकीर्ण बाटपर निःसंकोच चलबामे हमरा सामर्थ्य प्रदान तँ करितहि अछि, संगहि ओ सदिखन ऊर्जान्वित आ प्रेरित करैत रहल अछि।

व्याकरणशास्त्र तँ गणित सदृशहि होइछ। गणितमे जहिना सूत्र आ प्रमेयक सिद्धान्त होइछ, तहिना व्याकरणशास्त्रहुमे, जकरा विस्थापित करब कथमपि संभव नहि। एहिमे साहित्य सदृश ने तँ कल्पनाक स्थान

अछि आ, ने साहित्य जकाँ एकरा विस्तारिते कएल जा सकैछ। तँ एहि पोथीमे व्याकरणशास्त्रपर उपलब्ध संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजीमे कतोक बहुचर्चित एवं स्तरीय ग्रन्थसभक उत्कृष्ट अंशक निस्संकोच रूपँ उपयोग कएल गेल अछि। अतएव, हम ओहेन समस्त ज्ञान-शिरोमणि कृतिकारलोकनिक प्रति अपन विनम्र आभार प्रकट करैत छी।

हम सौभाग्यशाली छी जे एहि पोथीक लेल परमपूज्य मिथिला-मनीषी पं. गोविन्द झा; प्रकाण्ड वैयाकरण प्रो. शशिनाथ झा (वर्तमान कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा); बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालयक विद्वान् कुलपति प्रो. हनुमान प्रसाद पाण्डेय; मैथिली जगत् केर ख्यातिनामा हस्ताक्षरद्वय प्रो. देवेन्द्र झा एवं प्रो. इन्द्रकान्त झा तथा संस्कृत-मैथिली-हिन्दीक उद्‌भट विद्वान् प्रो. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'क शुभाशंसा हमरा प्राप्त भेल अछि। एहि सभ महापुरुष ओ महामनीषी लोकनिसँ उऋण हएब असंभव अछि। एतदर्थ हिनकालोकनिक चरण-कमलमे कोटिश: नमन निवेदित करैत छिअनि। संगहि हम परमादरणीय गुरुवर पं. भोला झा (चिकना, अवकाश प्राप्त शिक्षक, उच्च विद्यालय, कालिकापुर)कँ नमन करैत छिअनि जनिक आशिष हमरा छात्र जीवनहिसँ सतत रचनात्मक कार्य करबाक प्रेरणा प्रदान करैत रहल अछि।

हम आभारी छी बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुरक अवकाश प्राप्त एवं वर्तमानमे मैथिलीक सभ शिक्षकलोकनिक प्रति, विशेष रूपसँ अपन पीएच.डी. (विद्यावारिधि)- उपाधिक निदेशक-पर्यवेक्षक परमादरणीय डा. अमरनाथ झाक जे सतत एहि पोथी-रचनाक हेतु समय-समयपर अपन परामर्श दैत रहलाह आ चरिअबैत रहलाह। एहिखन अपन महाविद्यालयक विभागीय सहकर्मी आदरणीय डॉ. इन्दुधर झाजी आ बिहार लोकसेवा आयोगसँ चयनित मैथिलीक उनचासो शिक्षक-मित्रगणकँ धन्यवाद देब कथमपि नहि बिसरि सकैत छी जे बेर-बेर एहि पोथीक मादे तगेदापर तगेदा करैत रहलाह। यथार्थमे पूछी तँ हिनकहि लोकनिक उत्साहवर्धनसँ ई दुरूह काज सम्भव भ' सकल अछि।

एहि प्रसंग हमर सहधर्मिणी श्रीमती वीणा झाक योगदान सेहो कम नहि छनि। ई मिथिलाक सुदूर गाम-घरमे कंठगत देशज शब्द, शब्द-युग्म, अव्युत्पन्न, वाग्धारा तथा लोकोक्तिक संकलनमे तँ सहयोग करबे कएलनि, संगहि लेखन कार्यक समय हमरा गृहकार्यसँ पूर्णत:

मुक्त क' ओ जे एकान्त अवसर प्रदान कएलनि से चिरस्मरणीय रहत। यथार्थ तँ ई अछि जे ओ कटिबद्ध भ' हमरा सतत एहि कार्य हेतु उत्प्रेरित करैत रहलीह, मुदा अर्धांगिनी होएबाक कारणेँ ई तँ हुनकहु काज छलनि तेँ हुनका प्रति आभार प्रकट क' हम हुनक योगदानक अवमूल्यन नहि करए चाहब। हम अपन ज्येष्ठ सुपुत्र चिरंजीव कौशलजी आ कनिष्ठ दीपक जी, पुत्रवधू सौभाग्यवती सोनीक संगहि सुपुत्री सौभाग्यवती अंशु आ जामाता चिरंजीव अर्पितजीकेँ सहृदय आशिष दैत छिअनि जे विदेश (कनाडा)मे रहितहुँ एहि पोथी-प्रकाशनक मादे बेर-बेर जिज्ञासा करैत रहलाह अछि।

हम ज्ञात-अज्ञात ओहिसभ कृतिकारलोकनिक प्रति हृदयसँ अपन कृतज्ञता ज्ञापित करैत छिअनि, जनिकासँ कोनहुँ रूपेँ एहि पोथीक रचनामे सहयोग भेटल।

सभ किछु रहनहुँ जँ प्रतिभा प्रकाशन, मुजफ्फरपुरक संचालक श्री अजित कुमार वर्माजीक सहयोग हमरा नहि भेटैत तँ ई ग्रन्थ स-समय एतेक भव्य कलेवरक संग कथमपि प्रकाशित नहि भ' पबैत। तँ हुनकहुँ प्रति हम आभार प्रकट करब अपन पुनीत कर्त्तव्य बुझैत छी।

आब जाहि रूपेँ एहि 'मैथिली व्याकरण ओ रचना' पोथीकेँ आकार द' सकलहुँ, तकरा अपन इष्ट देवी मा जगदम्बाकेँ समर्पित करैत अपनेलोकनिक समक्ष प्रस्तुत कएल अछि। आशा अछि सुधीजन, गुणग्राही शिक्षक-समुदाय तथा जिज्ञासु छात्र-छात्रालोकनिकेँ ई पोथी उपयोगी आ रुचिकर प्रतीत होएतनि। अनुरोध जे त्रुटिक जनतब हुअए, जाहिसँ पुनर्मुद्रणमे तकर निवारण करा सकी। अन्तमे एतबे कहब जे ''गच्छत: स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादत:। हसन्ति दुर्जानास्तत्र समादधति सज्जना:।।'' अर्थात् कविवर सीताराम झाक एहि पाँतीकेँ स्मरण करैत एतबे कहल जा सकैछ जे–

'चलनिहार संयोगवश, पथपर पिछड़ि खसैछ।
सुजन सम्हारथि हाथ धए, दुर्जन देखि हँसैछ।।'

किं बहुना ?

मुजफ्फरपुर **–विजयेन्द्र झा**
वसंत पंचमी
16 फरवरी, 2021